मीडिया और महिला सशक्तिकरण

अंकिता द्विवेदी ,शोधार्थी) जनसंचार और पत्रकारिता(
प्रो) .डॉ (.मनीष कांत जैन ,शोध पर्यवेक्षक
एलएनसीटी यूनिवर्सिटी ,भोपाल) मप्र(

शोध सारांश -वर्तमान दौर सूचना क्रांति का दौर है। इस क्रांति में समाज का कोई वर्ग अछूता नहीं है। समाज के हर वर्ग को मीडिया ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। इस दौर में सूचनाओं या संदेशों को त्वरित गति से पहुंचाया जा रहा है। इसके लिये मीडिया के अलग-अलग माध्यमों का प्रयोग किया जा रहा है। मीडिया का सफर प्रिंट से शुरू होकर इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं सोशल मीडिया के अलग-अलग प्लेटफार्म तक पहुंच गया है। इस सफर ने देशों की सीमाओं को भी लांघ लिया। पहले प्रिंट मीडिया की अपनी सीमायें होती थी ,लेकिन इलेक्ट्रानिक मीडिया और फिर सोशल मीडिया के सफर ने इन सीमाओं को भी तोड़ दिया गया।

मीडिया के बढ़ते प्रचलन से महिलायें भी अछूती नहीं रही है। बढ़ी संख्या में महिलाओं ने मीडिया के क्षेत्र में कदम रखा। कुछ महिलाओं ने मीडिया के बढ़ते क्रेज के कारण तो कई ने स्वरोजगार के साधन के रूप में मीडिया के क्षेत्र को चुना। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है ,कि मीडिया का क्षेत्र दुविधा ,दुर्गम और 24 घंटे सक्रिय रहने का कार्य है। बाकी सेवाओं या कार्यो से मीडिया का क्षेत्र अलग है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है ,कि क्या मीडिया के क्षेत्र में महिलायें सुरक्षित है और मीडिया में कार्य कर रही महिलायें सशक्तिकरण की दिशा में आगे अग्रसर हो पा रही है? प्रस्तुत अध्ययन के दौरान मीडिया के क्षेत्र में कार्य कर रही महिलाओं की सशक्तिकरण की दिशा में योगदान और किये जा रहे प्रयासों का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

की-वर्ड- मीडिया ,स्वरोजगार ,सशक्तिकरण ,महिलायें ,सेवायें और सक्रियता आदि।

प्रस्तावना

महिलाओं के मीडिया के क्षेत्र में कार्य करना भारत जैसे देश में कोई आसान कार्य नहीं है। आजादी के बाद के भारत को देखे तो जातीय व्यवस्था के मकड़जाल में फंसे भारतियों में महिलाओं की भूमिका घरों तक ही सीमित थी। हालांकि यह शतप्रतिशत नहीं था ,क्योकि आजादी की लड़ाई में भी कई महिलाओं ने अपना सक्रिय योगदान दिया था ,लेकिन 80 से 90 फीसदी महिलायें सिर्फ घरों तक सीमित था। आजादी के कुछ सालों तक तो महिलाओं की शिक्षा पर फोकस भी नहीं किया जाता था। बेटियों को पराया घन समझने वाले समाज ने महिलाओं की शिक्षा पर धन खर्च करना व्यर्थ समझा। हालांकि 70 के दशक के बाद से महिलाओं की शिक्षा को लेकर समाज जागरूक हुआ। 2000 के दशक में तो महिलायें ,पुरूषों के साथ कदमताल करने लगी। वर्तमान दौर में 50 फीसदी सरकारी नौकरी में आरक्षण मिलने के बाद

महिलाओं ने पुरूषों को पीछे छोड़ दिया है। किसी भी भर्ती परीक्षा या प्रवेश परीक्षा में परिणामों का विश्लेषण करने पर पता चलता है ,कि महिलायें ,पुरूषों से आगे हो रही है। ये सिर्फ नौकरी तक सीमित नहीं है ,बल्कि सामाजिक ,राजनैतिक ,सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों में भी महिलाओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

अब यदि मीडिया के क्षेत्र की बात करें तो मीडिया का क्षेत्र पुरूष वर्चस्व का क्षेत्र रहा है। हालांकि कुछ महिला साहित्यकारों ने जरूर अपनी कलम से जागरूकता की दिशा में अपना योगदान दिया ,लेकिन वे महिलायें भी मीडियाकर्मी नहीं बल्कि साहित्यकार थी। 80 के दशक के बाद मीडिया के क्षेत्र में आयी क्रांति के बाद अब महिलायें भी मीडिया के क्षेत्र में न सिर्फ सक्रिय हो गयी है ,बल्कि अपने कार्यो से पूरे देश का ध्यान आकर्षित कर रही है। इसमें नलिनी सिंह से चित्रा त्रिपाठी जैसे सैकड़ों की संख्या में नाम है ,जिन महिलाओं ने अपनी बौद्धिक क्षमता और मेहनत से मीडिया के क्षेत्र में अलग पहचान बनायी। वर्तमान दौर में मीडिया के क्षेत्र में बड़ी संख्या में महिलायें काम सफलतापूर्वक कार्य कर रही है। हालांकि महिलाओं के लिये यह कठिन कार्य है ,क्योकि पुरूष प्रधान मीडिया में महिलाओं की स्वीकार्यरता उस हद नहीं पहुंच पायी है ,जिस प्रकार की स्वीकार्यरता होनी चाहिये थी। इतना ही नहीं अब तो मीडिया के आधुनिक माध्यम जैसे सोशल मीडिया के अलग-अलग प्लेटफार्म पर महिलायें सक्रिय होकर स्वरोजगार की दिशा में भी अग्रसर है।

पूर्व साहित्य का अध्ययन

मधु कुमारी) 2024 (ने सोशल मीडिया और महिला सशक्तिकरण विषय पर शोध कार्य किया। उन्होने अपने अध्ययन के सारांश में लिखा है ,कि सोशल मीडिया सामाजिक परिवर्तन का एक ऐसा माध्यम बन गया है ,जिसने महिला सशक्तिकरण में विभिन्न पहलुओं जैसे कि वैश्विक समुदाय का ध्यान महिला अधिकारों की ओर आकर्षित करना और दुनिया भर में भेदभाव और रूढ़िवादिता को चुनौती देना आदि में मदद की है। इस शोध पत्र के माध्यम से उन्होंने सोशल मीडिया में महिला अधिकारों की चर्चा ,सरकार और नीति निर्माताओं को लिंग समानता के लिये प्रति प्रतिबद्धताओं को बढ़ाने और नीतियों को प्रोत्साहित करने का भी प्रयास किया। शोध पत्र के माध्यम से उन्होने महिलाओं की सोशल मीडिया में भागीदारी के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं की भी चर्चा की है।

डॉ .आशीष द्विवेदी) 2017 (ने भारतीय मीडिया में महिलाओं का प्रतिनिधित्व और चुनौतियॉः विश्लेषणात्मक अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया। उन्होने अपने शोध अध्ययन के सारांश में लिखा है ,कि महिला सशक्तिकरण, महिला आरक्षण, लैंगिक समानता, महिला शोषण जैसे गंभीर और सरोकारी मुद्दों पर बहस, परिचर्चा और अभियान छेड़ने वाले मीडिया सेक्टर में महिलाएं

आज भी बराबरी पर नहीं हैं। भारतीय मीडिया के अमूमन सभी क्षेत्रे प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, वेब, मैग्जीन में महिलाओं का औसत पुरूषों की तुलना में बेहद कम है। जो कुछ हैं ,भी वे इस ओहदे पर नहीं कि कोई निर्णायक भूमिका निभा सकें।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के लिये निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है ,जो इस प्रकार से है।

1-मीडिया में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।

2-मीडिया में कार्यरत महिलाओं की कार्यस्थल पर होने वाली परेशानियों का पता लगाना।

3-महिला मीडियाकर्मियों के मीडिया के क्षेत्र में किये जाने वाले कार्य और पारिवारिक दबाब के बीच सामंजस्य का अध्ययन करना।

4-महिला मीडियाकर्मियों की मीडिया के क्षेत्र में सफलता का ऑकलन करना।

शोध प्रविधि -प्रस्तुत शोध अध्ययन सर्वेक्षण विवरणात्मक शोध प्रविधि से किया गया है। अध्ययन के दौरान प्राथमिक और द्रितीयक ऑकड़ों को संकलित कर उनका वर्गीकरण ,सारणीयन और फिर विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र -प्रस्तुत शोध अध्ययन मध्यप्रदेश की राजधानी में किया गया है। राजधानी भोपाल से महिला मीडियाकर्मियों का चयन कर अध्ययन को पूरा किया गया है।

न्यादर्श का चयन -प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श का चयन सौउद्देश्य निदर्शन प्रणाली से किया गया है। अध्ययन के लिये भोपाल से मीडिया माध्यम प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया से50 - 50महिलाओं का चयन किया गया है।

अध्ययन के लिये न्यादर्श का आकार

प्रस्तुत शोध अध्ययन के 100 महिला मीडियाकर्मियों का चयन भोपाल शहर से किया गया है। अध्ययन में शामिल महिला मीडियाकर्मी सक्रिय रूप से मीडिया में कार्यरत है। न्यादर्श का आकार इस प्रकार से है -

तालिका क्रमांक-1

न्यादर्श का आकार	महिला मीडियाकर्मी	उत्तरदाताओं की संख्या
	1-प्रिंट मीडिया	50
	2-इलेक्ट्रानिक मीडिया	50
	कुल	100

इस प्रकार से अध्ययन के लिये प्रिंट मीडिया से 50 और इलेक्ट्रानिक मीडिया से 50 सक्रिय महिला मीडियाकर्मियों का चयन किय गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के लिये स्वःनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। अध्ययन के दौरान चयनित महिला मीडियाकर्मियों से स्वःनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से उनके मत ,विचार और अभिमतों को ऑकड़ों के रूप में संकलित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यकीय प्रविधियां

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान संकलित किये गये प्राथमिक ऑकड़ों को एसपीएसएस साफ्टवेयर के वर्जन 2. 0से विश्लेषित किया गया है।

परिणाम और विश्लेषण

1-आपको प्रतिदिन कितने घंटे काम करना पड़ता है?

तालिका क्रमांक-2

कार्य का समय	उत्तरदाताओं की संख्या			
	प्रिंट मीडिया	आवृत्ति	इलेक्ट्रानिक मीडिया	आवृत्ति
8घंटे	28	56फीसदी	10	20फीसदी
8से 10 घंटे	12	24फीसदी	15	30फीसदी
10घंटे से अधिक	10	20फीसदी	25	50फीसदी
कुल	50	100फीसदी	50	100फीसदी

विश्लेषण -प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है ,कि प्रिंट मीडिया की अपेक्षा इलेक्ट्रानिक मीडिया में महिलाओं को देर तक काम करना पड़ता है। इलेक्ट्रानिक मीडिया में लगभग आधी महिलायें 10 घंटे से ज्यादा कार्य करती है।

2-क्या आपको परिवारिक सहयोग मिलता है?

तालिका क्रमांक-3

परिवार का सहयोग	उत्तरदाताओं की संख्या			
	प्रिंट मीडिया	आवृत्ति	इलेक्ट्रानिक मीडिया	आवृत्ति
हां	15	30 फीसदी	25	50फीसदी
नहीं	25	50 फीसदी	14	28फीसदी
कभी कभार	10	20 फीसदी	11	22फीसदी
कुल	50	100फीसदी	50	100फीसदी

विश्लेषण -प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है ,कि इलेक्ट्रानिक मीडिया से जुड़ी महिलाओं को घर से ज्यादा सहयोग मिलता है। इसके अलावा प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया की महिलाओं को कभी-कभार सहयोग लगभग बराबर संख्या में मिलता है।

3-मीडिया में काम करने के दौरान क्या समाज में आपकी बाकी महिलाओं जैसी स्वीकार्यता है?

तालिका क्रमांक-4

स्वीकार्यता	उत्तरदाताओं की संख्या			
	प्रिंट मीडिया	आवृत्ति	इलेक्ट्रानिक मीडिया	आवृत्ति
हां	09	18फीसदी	12	24फीसदी
नहीं	34	68फीसदी	32	64फीसदी
थोड़ी बहुत	07	14फीसदी	06	12फीसदी
कुल	50	100फीसदी	50	100फीसदी

विश्लेषण -प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है ,कि मीडिया में काम करने के दौरान महिलाओं की बाकी समाज की अन्य महिलाओं की तुलना में स्वीकार्यता कम है। प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया दोनों में कम स्वीकार्यता का प्रतिशत लगभग बराबर है।

4-मीडिया में महिला होने के कारण क्या आपको किसी विशेष मौके से वंचित किया गया?

तालिका क्रमांक-5

विशेष मौके से वंचित	उत्तरदाताओं की संख्या			
	प्रिंट मीडिया	आवृत्ति	इलेक्ट्रानिक मीडिया	आवृत्ति
हां	29	58फीसदी	32	64फीसदी
नहीं	06	12फीसदी	08	16फीसदी
कभी कभार	15	30फीसदी	10	20फीसदी
कुल	50	100फीसदी	50	100फीसदी

विश्लेषण -प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है ,कि महिला होने के बाद महिलाओं को मीडिया के क्षेत्र में विशेष मौके या खास कवरेज से वंचित किया जाता है। महिला मीडियाकर्मियों में इलेक्ट्रानिक मीडिया से जुड़ी महिलाओं के साथ प्रिंट मीडिया से जुड़ी महिलाओं की तुलना में ज्यादा किया जाता है।

5-मीडिया कार्यालय में पुरूष साथियों का आपके प्रति नजरिया और व्यवहार कैसा होता है?

तालिका क्रमांक-6

नजरिया और व्यवहार	उत्तरदाताओं की संख्या			
	प्रिंट मीडिया	आवृत्ति	इलेक्ट्रानिक मीडिया	आवृत्ति
सकारात्मक	12	24फीसदी	10	20फीसदी
नकारात्मक	30	60फीसदी	32	64फीसदी
ठीक ठाक	08	16फीसदी	08	16फीसदी
कुल	50	100फीसदी	50	100फीसदी

विश्लेषण -प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है ,कि पुरूष सहकर्मियों का भी व्यवहार ,महिला मीडियाकर्मियों के प्रति ज्यादातर मौके पर नकारात्मक रहता है। कुछ महिलाओं के प्रति व्यवहार या नजरिया ठीक ठाक रहता है ,लेकिन वो व्यक्तिगत कारणों से।

6-क्या आपको कार्यालय में किसी असहज स्थिति का सामना करना पड़ा?

तालिका क्रमांक-7

असहज स्थिति का सामना	उत्तरदाताओं की संख्या			
	प्रिंट मीडिया	आवृत्ति	इलेक्ट्रानिक मीडिया	आवृत्ति
हां	22	44फीसदी	28	56फीसदी
नहीं	12	24फीसदी	10	20फीसदी
एकाध बार	16	32फीसदी	12	24फीसदी
कुल	50	100फीसदी	50	100फीसदी

विश्लेषण -प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है ,कि इलेक्ट्रानिक मीडिया से जुड़ी महिला कर्मियों को कार्यालय में ज्यादा असहज स्थिति का सामना करना पड़ता है। सबसे बड़ी बात यह है ,कि लगभग हर महिला मीडियाकर्मी को कभी न कभी असहज स्थिति का सामना करना ही पड़ा।

7-क्या आपको कभी देररात तक काम करने के लिये रूकना पड़ा?

तालिका क्रमांक-8

देररात रूकना	उत्तरदाताओं की संख्या			
	प्रिंट मीडिया	आवृत्ति	इलेक्ट्रानिक मीडिया	आवृत्ति
हां	12	24फीसदी	18	36फीसदी
नहीं	25	50फीसदी	20	40फीसदी
कई मौके पर	13	26फीसदी	12	24फीसदी
कुल	50	100फीसदी	50	100फीसदी

विश्लेषण -प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है ,कि इलेक्ट्रानिक मीडिया में महिलाओं को देररात कर काम करने के लिये रूकना पड़ता है। रोजमर्रा के कार्य के दौर भले ही देररात नहीं रूकना पड़े ,लेकिन कई मौके पर प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया से जुड़ी महिलाओं को कार्यालय में देररात रूकना पड़ता है।

8-लगातार कार्य करने से परिवार के सदस्यों के व्यवहार में कोई परिवर्तन आपने देखा?

तालिका क्रमांक-9

व्यवहार में	उत्तरदाताओं की संख्या

परिवर्तन	प्रिंट मीडिया	आवृत्ति	इलेक्ट्रानिक मीडिया	आवृत्ति
हां	20	40फीसदी	32	64फीसदी
नहीं	20	40फीसदी	08	16फीसदी
कभी कभार	10	20फीसदी	10	20फीसदी
कुल	50	100फीसदी	50	100फीसदी

विश्लेषण -प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है ,कि लगातार कार्य करने से इलेक्ट्रानिक मीडिया की महिलाकर्मियों के परिवार के सदस्यों के व्यवहार में परिवर्तन देखा गया है। हालांकि सबसे ज्यादा प्रिंट मीडिया से जुड़ी महिलाओं का कहना है ,कि उनके कार्य करने से परिवार के सदस्यों के व्यवहार में कोई खास परिवर्तन नहीं आया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है ,कि महिलाओं का मीडिया के क्षेत्र में कार्य करने में सामाजिक और पारिवारिक स्तर के साथ ही कार्यस्थल पर कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं इलेक्ट्रानिक मीडिया की मीडिया कर्मियों का कहना है ,कि उनके परिवार के सदस्यों तक में उनके कार्य करने के बाद से व्यवहार में परिवर्तन हुआ है। मीडिया से जुड़ी महिलाओं को साथी पुरूष सहकर्मियों के नकारात्मक व्यवहार का भी सामना करना पड़ता है। महिला मीडियाकर्मियों को देररात कर कार्य करने के लिये रूकना पड़ता है। वही विशेष मौकों की कवरेज या अन्य किसी कवरेज का मौका भी महिलाओं के हाथ से सिर्फ इसलिये निकल जाता है ,क्योकि वो महिला है। हालांकि इन सभी प्रकार के व्यवधान और बाधाओं के बाबजूद भी महिलाओं की मीडिया में कार्य करने के प्रति रूचि बढ़ती जा रही है और साल दर साल मीडिया के क्षेत्र में महिलाओं की संख्या में इजाफा हो रहा है। ये स्पष्ट रूप से संकेत है ,कि मीडिया के क्षेत्र में भले ही महिला सशक्तिकरण का संकल्प अधूरा हो ,लेकिन महिलाओं के हौंसले बुलंद है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1-पाटिल ,सी.आर) .2004(, शोध प्रविधियां और उनका मूल्यांकन ,वाणी प्रकाशन ,मेरठ।

2- https://www.researchgate.net/publication/378042467

3- www.mcu.ac.in/media-mimansa/2017/July-September-2017/mm-50-57.pdf

4- Women Journalist in india: swimming Against The tide: R. Akhileshwari

5-महिला पत्रकारों की संघर्ष गाथा-माधवी श्री